एक नन्हा-सा पौधा

■ राजेश अजवानी 'राज'

राजेश जी हमारी प्यारी सी टाईप-1 मधुमेही बच्ची आरती के पिता हैं। उन्होंने अपनी मन की भावनाओं को कलम से काग़ज़ पर उतारा है।

- संपादक

आज ईश्वर ने सोते हुये मुझे जगाया है,
टाईप 1 के बच्चों के लिये
इंसुलिन इंजेक्शन की जगह दर्द रहित
ऐसा मरहम बनाने का फार्मूला बताया है
जिसे चेहरे पर लगाते ही
''शुगर लेवल'' नॉरमल सा आया है,
यह सुनकर सभी डॉक्टर को चक्कर सा आया है।
डॉक्टर का ईलाज करने के लिये
बाहर से डॉक्टर की टीम को बुलाया है।
डॉक्टर को डॉक्टर का ईलाज करने में
पसीना आया है।
आज पहली बार टाईप-1 के बच्चे ने
डॉक्टर को इंजेक्शन लगाया है।
यह सब देखकर बच्चों ने ठहाका लगाया है।

यह दर्द रहित मरहम का राज़ मैं अपने तक ही सीमित नही रखना चाहता। हर उस माँ–बाप व बच्चों को बताना चाहता हूँ, ताकि किसी भी माँ को उसके बच्चे के दर्द का एहसास कभी न हो। जब भी बच्चा यह सवाल करे कि यह तकलीफ मुझे ही क्यों? क्योंकि यह सवाल मेरी बच्ची ने अपनी माँ से रोते हुए कहा था। माँ ममता की मारी बच्ची को जवाब नहीं दे सकी। लेकिन पिता का पत्थर–सा कठोर दिल उस सवाल का हल ज़रूर ढूँढ लेता है।

टाईप–1 का बच्चा कोई मामूली सा बच्चा नहीं होता। वह तो अपने आप में नंबर–1 होता है, जिसके साथ नंबर–1 जुड़ा होता है। वह लक्की नंबर होता है। वह हर क्षेत्र में नंबर–1 आता है।

जिस तरह किसी भी पौधे को एक स्थान से दूसरे स्थान पर लगाया जाता है, वह कुछ दिनों के लिये मुरझा जाता है। अगर हम उस पौधे की अच्छी देखभाल कर समय से पाँचों तत्व : जिससे सारे संसार की उत्पत्ति हुई (रचना हुई)। जैसे खाद के रूप में मिट्टी, हवा, पानी, धूप व आकाश के सम्पर्क में लाते हैं, व माली की तरह अच्छी देखभाल करते हैं तो वही नन्हा पौधा फिर से फलने–फूलने लगता है व जड़ों को ज़मीन में उतारता चला जाता है।

ऐसा ही एक पौधा ''आरती'' नाम का मैं इंदौर

से लाया हूँ जो कि आज भोपाल के सुन्दर प्राकृतिक वातावरण में पूरी तरह खिल उठा है। उसमें नई–नई शाखाएँ व रंग–बिरंगे फूल व नई उमंगों के साथ मेरे आँगन में खिला उठा है। यह फूल जब फल देंगे कल्पना करें वे कितने मीठे होंगे। शायद शहद और गुड़ भी उसके आगे फीके लगने लगेंगे।

आज स्कूल की क्लास में साईंस सब्जेक्ट में 'आरती' नंबर–1 आई है, 30 में से 30 नम्बर लाई है। ब्लेक बोर्ड पर उसका नाम पढ़कर खुशी से सारे दुख–दर्द दूर हो गये। भूल गये कि कोई जीवन में घटना घटी थी। परमहँस संत हिरदाराम साहिब की हम पर असीम कृपा है।

अतीत की मुश्किलों में डूबे रहना ठीक नहीं। प्रकृति परिवर्तनशील है। कितनी ही गहरी अंधेरी रात को वह बीतती है, और उसके बाद रोशनी का सूरज निकलता है। दुख ही व्यक्ति को माँझता है। यह वह कसौटी है, जिस पर मनुष्य के गुणों और धैर्य की परीक्षा होती है।

जिनके पास कोई मुश्किलें नहीं हैं वे कब्रिस्तान में लेटे मुर्दों के समान हैं। मुश्किल तो मनुष्य जीवन का लक्ष्य है। भगवान से मुश्किलों से दूर रखने की प्रार्थना करने की प्रार्थना करने की बजाये हमारी प्रार्थना होनी चाहिये, हे, ईश्वर मुझे अधिक मुश्किलें दीजिये और हल करने के लिये और ज्यादा बुद्धिमत्ता भी।

डायबिटीज़ के डॉक्टरों ने पहले से ही दर्द रहित इंसुलिन पेन लगाने की सलाह देकर टाईप–1 बच्चों को एक नया जीवन दिया है। बच्चों की दुआएँ हमेशा आपके साथ रहेंगी। सभी माता–पिताओं की तरफ से आपको सलाम। ●●●

कल की खुशियाँ किसने देखीं,
आज की खुशियाँ खोयें क्यों?
जिन घड़ियों में हँस सकते हैं,
उन घड़ियों में रोयें क्यों?

"सबका मंगल हो, सबका कल्याण हो,
सब स्वस्थ रहें, सब सुखी रहें"

प्रेरणा

संकलन :
आरती अजवानी

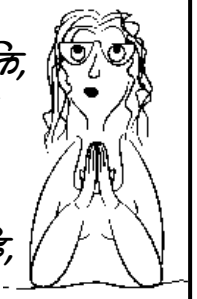

मैंने भगवान से माँगी शक्ति,
उसने मुझे दी कठिनाईयाँ,
हिम्मत बढ़ाने के लिए।

मैंने भगवान से माँगी बुद्धि,
उसने मुझे दी उलझनें
सुलझाने के लिए।

मैंने भगवान से माँगी समृद्धि,
उसने मुझे दी समझ,
काम करने के लिए।

मैंने भगवान से माँगा प्यार,
उसने मुझे दिए दुखी लोग,
मदद करने के लिए।

मैंने भगवान से माँगी हिम्मत,
उसने मुझे दी परेशानियाँ,
उबर पाने के लिए।

मैंने भगवान से माँगा वरदान,
उसने मुझे दिए अवसर,
उन्हें पाने के लिए।

वो मुझे नहीं मिला जो मैंने माँगा था,
मुझे वो मिल गया जो मुझे चाहिए था।